E-Content for student of Patliputra University Patna Bihar

Course -B.A part-1

Subject- Hindi composition(100marks)(हिन्दी रचना)

Topics heading-आदर्श निबंध कैसे लिखें। कुछ महत्वपूर्ण तथ्य।

-डॉ प्रफुल्ल कुमार एसोसिएट प्रोफेसर अध्यक्ष हिन्दी विभाग आरआरएस कॉलेज मोकामा पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना बिहार।

निबन्ध लेखन एक साहित्यिक कला है। यह साहित्यिक कला निबंध लेखक के आंतरिक व्यक्तित्व का परिचय देता है। निबन्ध में विषय वस्तु मात्र एक बहाना होता है ,जबकि निबन्ध कार स्वयं को उस में अभिव्यक्त करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि निबन्ध लिखने वाले का ज्ञान अनुभव उसकी अभिव्यक्ति की शैलियाँ एवं उनकी मनोदशा का पूर्ण परिचय दिए गए विषय के माध्यम से अभिव्यक्त हो जाता है। इसलिए हमारी भारतीय शिक्षा पद्धति में किसी व्यक्ति के आंतरिक शैक्षणिक उपलब्धियों एवं योग्यता का मूल्यांकन करने के लिए उससे निबंध लिखने का आग्रह किया जाता है। छात्र जीवन की प्रारम्भिक अवस्था से विभिन्न प्रतियोगिताओं,भारतीय प्रशासनिक सेवाओं के लिए भी योग्य व्यक्ति के चयन की परीक्षाओं में निबंध लेखन को महत्व देने का यही अभिप्राय होता है निबन्ध व्यक्ति के व्यक्तित्व का संपूर्ण परिचय देने में सक्षम होता है। इसीलिए इसे शैक्षणिक योग्यता एवं मानसिक योग्यता का मूल्यांकन करने का साधन बना लिया गया है।

अतः निबन्ध लिखते समय कुछ महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान देना चाहिए। निबंध लिखने में निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए।

ध्यातव्य है कि निबन्ध संसार की किसी भी विषय वस्तु पर लिखा जा सकता है,चाहे वह मानसिक मनोभाव हो ,समसामयिक घटनाएं हों,

व्यक्ति विशेष का परिचय हो अथवा किसी भी प्रकार की समस्या। संक्षेप में यह समझ लेना चाहिए कि संसार में कोई भी ऐसी विषय वस्तु नहीं है जिस पर निबन्ध नहीं लिखा जा सकता है

--निबन्ध लिखने में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि निबंधकार इस उधेड़बुन में खो जाता है कि कहां से निबन्ध की शुरुआत की जाए ।इसलिए छात्रों को ध्यान देना चाहिए कि निबंध की शुरुआत किसी भी वाक्य या प्रसंग से कर सकते हैं ,परंतु वह आकर्षक होना चाहिए। पाठक तभी निबंध को पढ़ने के लिए उत्सुक होगा जब हम उसकी शुरुआत आकर्षक ढंग से करेंगे। विषय वस्तु को सामने रखकर निबंध लिखते समय अंत तक एक तारतम्यता बनाए रखेंगे।

छात्रों को निबन्ध लिखते समय अपने मनोनुकूल अपनी भाषा एवं शब्दावली का प्रयोग करते हुए निबन्ध लिखना चाहिए। जटिल और भारी भरकम शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। प्रचलित शब्दों और भाषा का ही उपयोग अधिक अच्छा होता है चाहे वह किसी भी भाषा से लिया जाए वह संप्रेषणीय होता है।

-निबन्ध नकल की कला नहीं है। हम विभिन्न पुस्तकों, ग्रंथों, समाचार पत्रों, मीडिया के साधनों महापुरुषों के वक्तव्य का सहारा ले सकते हैं, परंतु ध्यान रहे कि उसे अपनी रचना कौशल के माध्यम से मौलिकता प्रदान करें। निश्चय ही निबन्ध हमारे भीतर की अनुभूतियों की प्रभावशाली अभिव्यक्ति होना चाहिए।

- हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि हमारी भाषा व्याकरण सम्मत शुद्ध हो। निबन्ध में विराम चिन्हों- ; , । ; ! ? उद्धरण चिन्हों-‘ ' “ “ का समुचित प्रयोग करना चाहिए। स्त्रीलिंग- पुलिंग ,लिंग-निर्णय के आधार पर वाक्यों की शुद्धता का ख्याल रखना चाहिए।

- सरल, सहज भावाभिव्यक्तिपूर्ण भाषा- शैली का उपयोग करना चाहिए ताकि सभी स्तर के पढ़े-लिखे व्यक्ति उसे हृदयंगम कर सकें । व्याकरण के नियमों को

ध्यान में रखकर सतर्कता एवं सफलतापूर्वक अपनी बातों को अभिव्यक्त करना चाहिए। देशकाल के अनुकूल भावों का समायोजन होना चाहिए।

-निबन्ध किसी प्रकार के बंधन को स्वीकार नहीं करता है फिर भी इसकी भी अपनी सीमा है। इसलिए सीमित आकार का निबंध ही लिखना चाहिए। इसकी विषय वस्तु छोटे-छोटे अनुच्छेदों में विभक्त होना चाहिए, जिससे पाठक को उब महसूस नहीं हो। एक घटना से दूसरी घटना का संबंध विच्छेद भी होना अच्छा नहीं रहता है। विषय वस्तु के विभिन्न पहलुओं को अभिव्यक्त करते समय इस बात का ख्याल रखा जाए ताकि पाठक को उलझन न हो।

निबंध का शीर्षक पूरे निबन्ध में व्याप्त मिलना चाहिए अर्थात विषयांतर में जाकर उलझ न जाएं। यह ध्यान रहे कि घटना या समस्या के इर्द-गिर्द भ्रमण अवश्य करें परंतु घटना या समस्या को पीछे छोड़ कर इतनी दूर नहीं चले जाएं कि पुनः उस घटना के विषय में वार्ता करने के लिए वापस नहीं लौट सकें। तात्पर्य हमारी बातें अधिक भटके नहीं।

-विषय वस्तु से संबंधित उद्धरण प्रमुख पुस्तकों, रचनाकारों, प्रतिष्ठित महापुरुषों के वक्तव्यों , धर्म ग्रंथों के उद्धरण लिख देने से निबंध की गरिमा और तथ्यों की पुष्टि में सहायता मिलती है। इसलिए निश्चय ही सूक्तियां ,काव्य ग्रंथों से उद्धरण प्रस्तुत करना चाहिए, परंतु ध्यान रहे कि उसमें भी वर्तनी संबंधी या पंक्तियों की सत्यता बनी रहे। जैसे-प्रसंग के अनुरूप-

"खम ठोक ठेलता है जब नर,पर्वत के जाते पांव उखड़।

मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है।"-दिनकर।

-जिस प्रकार निबन्ध का प्रारंभ रोचक एवं आकर्षक होना चाहिए उसी प्रकार विषय वस्तु की चर्चा करते समय गंभीरता को सहचता में परिवर्तित करना चाहिए। सहज सुलभ शब्दावली के सहारे हम आगे बढ़ें और अंत भी उसी प्रकार रोचक और उत्साहवर्धक बनाए रखें। किसी भी विषय की व्याख्या की कोई सीमा नहीं होती

है ।यह ध्यान में रखना चाहिए कि हमने इस विषय में बहुत ही कम ज्ञान का उद्गार किया है, शेष अभी बहुत बाकी है। इस विषय वस्तु पर दुनिया के किसी भी व्यक्ति को और बहुत कुछ कहना है। इसलिए अंत करते समय हम पाठकों को जागरूक और उत्साहित करें। चर्चा की असीम संभावनाएं बनाए रखना चाहिए। अंत में अपने विचार या निष्कर्ष अवश्य देंगे। समस्या का समाधान ,विषय से मिली शिक्षा ,लाभ हानि इत्यादि का उल्लेख अवश्य करेंगे। इस प्रकार यदि इन बातों को ध्यान में रखकर हम निबन्ध लिखते हैं, तो उसे पढ़कर पाठक हमारे व्यक्तित्व का मूल्यांकन कर सकेगा और हम सफल निबन्धकार माने जाएंगे।

****